B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-2
HISTORY HONS.
PAPER-2
UNIT-2(C)
Department of History
Pankaj KUMAR Mishra
Date-12/11/2020

# TOPIC-NATIONALISM IN CHINA-CHINESE REVOLUTION OF 1911AD

Scanned with CamScanner

# चीनी क्रांति के परिणाम / प्रभाव

1.) चीन में 1 अक्टूबर, 1949 ई० को साम्यवादियों ने लोकगणराज्य की स्थापना कर दी, इस प्रकार चीन साम्यवादी हो गया। माओ के नेतृत्व में साम्यवादी शासन की स्थापना के साथ चीन का रूपांतरण तो हुआ ही साथ ही पूरा विश्व भी व्यापक स्तर पर प्रभावित हुआ। इसके कुछ प्रभाव तो वर्तमान तक जारी हैं; ताइवान - तिब्बत के संदर्भ में इसे समझा जा सकता है।

2.) चीन की साम्यवादी क्रांति ने एशिया महाद्वीप के विशाल क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। इससे पश्चिमी शक्ति एवं साम्यवादियों के मध्य एक नया शक्ति संतुलन स्थापित हुआ।

3.) विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले देश में साम्यवाद की स्थापना के बाद ही न सिर्फ वह रशिया में एक मजबूत प्रस्तुति बनकर उभरा बल्कि इसका प्रभाव व्यापक हो गया।

4.) माओवादी चीन ने विश्व में प्रवासी चीनियों को इस बात के लिए ललकारा कि वे अपनी जन्मभूमि पैतृक भूमि के प्रति प्रेम और निष्ठा को प्रमाणित कर अपने स्वाभिमान को राष्ट्रीय गौरव के साथ जोड़ना आरंभ करें।

5.) इंडोनेशिया, मलेशिया तथा सिंगापुर जैसे देशों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा चीनी मूल के लोगों का है। वर्षों तक इंडोनेशिया की साम्यवादी पार्टी पीकिंग के निर्देशानुसार ही काम करती रही। विएतनाम का राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम माओवादी नमूने का ही रहा। राष्ट्रवाद का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाजवाद के साथ तालमेल स्थापित हुआ।

6.) किसानों के साम्यवादी क्रांति के आधार के रूप में स्वीकृत होने से मार्क्सवादी समाजवाद के बुनियादी सिद्धांत से अलग कार्यक्रम का विकास हुआ।

7.) साम्यवादी क्रांति की सफलता में चीन में गृहयुद्ध की समाप्ति हुई चूँकि माओ ने सत्ता सैनिक संग्राम में सफलता के बाद हासिल की थी। अतः क्रांति को चुनौती देने वाला कोई सशस्त्र प्रतिद्वन्द्वी बचा नहीं था, विरोधी पड़ोसी जापान तो पहले ही पराजित हो चुका था। अतः किसी बाहरी शक्ति द्वारा माओत्से तुंग और चाउ-एन-लाई ने

Scanned with CamScanner

चीन की राजनीतिक एवं आर्थिक प्रणाली को तत्काल एक ढाँचे में शामिल करना प्रारंभ कर दिया।

(8) 1949 ई० में जनवादी चीनी गणराज्य की स्थापना से यह लगने लगा कि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में साम्यवादी दल अचानक पहले से कहीं अधिक सुदृढ़ हो गया और लाल तलवार के प्रसार को तत्काल रोकने की आवश्यकता अमेरिका को महसूस हुई।

(9) भारत सहित चीन के आस-पास के देशों में माओवादी-चिंतन को प्रोत्साहन मिला। समस्याओं के निराकरण हेतु बहुत सारे हिंसक माओवादी स्वरूप सामने आए।

(10) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर चीनी क्रांति का व्यापक प्रभाव पड़ा। भले ही लगभग एक दशक तक सोवियत साम्यवादी दल की दरार जगजाहिर नहीं हुई, पर सभी बड़ी ताकतें यह स्वीकार करने को विवश हुई कि अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन निर्णायक रुप से बदल चुका है, इसका एक महत्वपूर्ण घटक चीनी साम्राज्य है।

Pankaj
12/11/2020

Scanned with CamScanner